

**Annual Report (1973-74) of the  
National Institute for Training in  
Industrial Engineering, Bombay**

THE MINISTER OF EDUCATION,  
SOCIAL WELFARE AND CULTURE  
(PROF. S. NURUL HASAN) : Sir, I beg to  
lay on the Table a copy (in English and  
Hindi) of the Annual Report of the National  
Institute for Training in Industrial  
Engineering, Bombay, for the year 1973-74.  
[Placed in Library. See No. LT-9196/75]

**CALLING ATTENTION TO A MATTER  
OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE**

**Situation arising out of Reported Closure  
of Banaras Hindu University**

श्री प्रकाशवीर शास्त्री (उत्तर प्रदेश) : सभापति जी,  
मेरे बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय को अनिश्चित काल  
के लिए बन्द कर देने के समाचार और उससे उत्पन्न  
स्थिति की और शिक्षा, समाज कल्याण और संस्कृति  
मंत्री का ध्यान आकषित करता हूँ।

[Mr. Deputy Chairman in the Chair.] THE  
MINISTER OF EDUCATION, SOCIAL  
WELFARE AND CULTURE (PROF. S.  
NURUL HASAN) : Sir . . .

According to information received from  
the Government of Uttar Pradesh and au-  
thorities of the Banaras Hindu University on  
the morning of March 13, 1975 the Vice-  
Chancellor administered the oath of office to  
the newly elected office bearers of the  
Students Union of Banaras Hindu University.  
Immediately after the office bearers had  
taken the oath. Shri Bharat Singh, General  
Secretary of the Union delivered a speech  
declaring that he will not allow the Vice-  
Chancellor's 'goondaism' and that he will take  
revenge against the Vice-Chancellor for all he  
has done during the last five years. He further  
said that from now onwards, even a leaf will  
not flutter in the University without his per-  
mission. He also threatened the Vice-  
Chancellor to leave the University imme-  
diately. The Vice-Chancellor passed in the  
afternoon of the same day orders expelling  
Shri Bharat Singh from the University for  
serious breach of discipline and gross  
misconduct.

At about midnight, a mob of students, led  
by Shri Bharat Singh, broke into the Vice-  
Chancellor's Lodge demanding cancellation  
of expulsion orders and indulged in acts of  
brick-battling, vandalism, hooliganism and  
looting. Sensing that there was imminent  
danger to the life of the Vice-Chancellor and  
threat of further damage to University  
property, the Police was called in the  
University and on its arrival the mob  
dispersed. The Vice-Chancellor ordered the  
closure of the University *sine die* and also  
asked students to vacate hostels.

There has been no disturbance on the  
campus since the closure of the University.  
Police has been posted in the campus for  
protection.

This hon'ble House will appreciate that  
academic life cannot go on in an atmosphere  
of violence and intimidation. Government is  
anxious that the sanctity of the University  
should be maintained. Acts of violence,  
threats, intimidation and abuses, particularly  
towards teachers can have no place in temples  
of learning, for such acts go against the best  
traditions of our culture. I would like to recall  
the objectives of the establishment of this  
great institution as enunciated by its founder,  
Pt. Madan Mohan Malaviya. One of the main  
objectives of the University was "to promote  
the building up of character in youth".

Through this House, therefore, I should  
like to appeal to all sections of the society to  
use their influence in restoring conditions  
where the great objectives on which the  
University is based may be pursued.

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : उपसभापति जी, बनारस  
भारत के उन भाग्यशाली नगरों में है जिनमें अकेले  
एक नगर में 4 विश्वविद्यालय हैं—हिन्दू विश्वविद्यालय,  
काशी विश्वविद्यालय, संस्कृत विश्वविद्यालय और अंगरेजों में  
भूल नहीं करता, वो मारनाथ में भी उसी तरह की  
बौद्ध संस्कृति के विश्वविद्यालय की स्थापना हुई।  
इनमें हिन्दू विश्वविद्यालय की जो अपनी परम्पराएँ और  
इतिहास रहा है उसकी दृष्टि से यह सबसे बड़ा विश्व-  
विद्यालय माना जाता है। किसी समय यह विश्व-  
विद्यालय हमारे स्वाधीनता संग्राम का नेतृत्व भी करना

[श्री प्रकाशबीर शास्त्री]

रहा है। लेकिन दुर्भाग्य से कुछ समय से यह विश्वविद्यालय संकुचित जातिवाद और राजनीति का भ्रष्टाचार बन गया है; जानबूझ कर कुछ लोग इसकी परम्पराओं और स्वरूप को नष्ट-भ्रष्ट करने पर तुले हुए हैं। देश का प्रमुख केन्द्रीय विश्वविद्यालय होने के बावजूद, मेरी अपनी इस प्रकार की मान्यता है कि शिक्षा मंत्रालय को भी इस विश्वविद्यालय की ओर ध्यान जितना देना चाहिए था उतना ध्यान नहीं दिया गया। उसके दो उदाहरण मैं देना चाहता हूँ। पहले तो मैं यही चाहूंगा कि शिक्षा मंत्री अपना उत्तर देते समय इस बात को अवश्य बताएं कि जब से वे शिक्षा मंत्री बने तब से वे कितनी बार केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में गए।

दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूँ कि हिन्दू विश्वविद्यालय को जो पीछे धन दिया गया है केन्द्रीय सरकार से—मेरे पास जो विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की रिपोर्ट है अगर उसके आंकड़े सही हैं तो उन्हीं के आंकड़ों से बताना चाहता हूँ—मैं केवल अलीगढ़ और बनारस इन दो विश्वविद्यालयों को ही ले लेता हूँ, कि अलीगढ़ विश्वविद्यालय के अंदर छात्रों की संख्या है 9769 और बनारस में है 14399। अध्यापक अलीगढ़ में हैं 869 और बनारस में हैं 1188। लेकिन जो उन्होंने प्लान के अंतर्गत दोनों को धन दिया है उससे अनुमान लगाइए कि शिक्षा मंत्रालय किस प्रकार से बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की उपेक्षा कर रहा है। अलीगढ़ को 1969-70 में दिया है 1,06,61,779.23; बनारस को दिया है 1,00,48,529.54 रु०; 1970-71 में दिया है अलीगढ़ को 79,28,604.36 और बनारस को दिया है 77,78,264.83 रु० और 1971-72 में अलीगढ़ को दिया है 3,42,82,361 और बनारस को दिया है 22468401.57 रु०। इससे आप अनुमान लगा लीजिए कि शिक्षा मंत्रालय किस प्रकार से विशेष रूप से बनारस विश्वविद्यालय के संबंध में उपेक्षा की नीति अपनाए हुए है। छात्रों के संघों का जो निर्वाचन होता है, मेरी अपनी इस प्रकार की मान्यता है कि हिन्दू विश्वविद्यालय में उप-कुलपति से चपरासी तक वहाँ के छात्र संघ के निर्वाचन में रुचि लेते हैं, कुछ तो अपनी राजनैतिक मान्यताओं के कारण लेते हैं और कुछ संकुचित जातिवाद में आकर लेते हैं। यों तो जातिवाद सभी बगहूँ आपको मिलेगा,

मगर बनारस में जो जातिवाद है वह जातिवाद नहीं, उप-जातिवाद है, सब-कास्ट वहाँ पर चलता है, मैं विस्तार से इसकी व्याख्या नहीं करना चाहता। मैं डा० श्रीमाली जो बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के उपकुलपति हैं उनकी योग्यता और अनुभव से अच्छी तरह परिचित हूँ। हालांकि व्यक्तिगत रूप से मैं उनका प्रशंसक रहा हूँ, केन्द्र में शिक्षा मंत्री के नाते और मैसूर में उपकुलपति के कार्यकाल में भी उनको अच्छी सफलता मिली है लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि वाराणसी में जाकर, नमक की झील में डा० श्रीमाली जैसे शिक्षा-शास्त्री वहाँ की संकुचित राजनीति में क्यों पड़ गए? वहाँ के जो छात्र संघ हैं उनमें तीन संगठन काम करते हैं—विद्यार्थी परिषद्, समाजवादी युव जन सभा और तीसरा स्टूडेंट्स फेडरेशन। उपकुलपति किसी भी विश्वविद्यालय का हों, वह विद्यार्थियों के संगठनों को समान रूप से सम्मान दें या किसी के साथ भी अपना संबंध न रखे। अगर किसी संगठन विशेष को पीठ किसी विशेष विश्वविद्यालय का उपकुलपति क्षपणता है तो उसका अर्थ होता है उनका झुकाव एक पक्ष की ओर है। अभी अक्टूबर में उत्तर भारत स्टूडेंट्स फेडरेशन का अधिवेशन बनारस विश्वविद्यालय के कैम्पस के अंदर हुआ, डा० श्रीमाली ने उसका उद्घाटन किया। लेकिन हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति को स्टूडेंट्स फेडरेशन के उद्घाटन के अवसर पर श्री जयप्रकाश नारायण के भ्रान्दोलन को बीच में लाने की क्या जरूरत थी और श्री जयप्रकाश जी की वहाँ पर चर्चा करने की क्या आवश्यकता थी? श्री जयप्रकाश जी का जो भ्रान्दोलन है, वह एक फासिस्ट भ्रान्दोलन है, इस प्रकार के शब्द कहने की क्या आवश्यकता थी? उसी से यह पता लगा कि विश्वविद्यालय के जो कुलपति हैं उनको किस प्रकार का एक पक्षीय रुख बराबर बनता ही चला जा रहा है।

अब यह जो विवाद प्रारम्भ हुआ है वह छात्र संघ के निर्वाचन को लेकर हुआ है। हिन्दू विश्वविद्यालय बनारस के इस छात्र संघ के नए निर्वाचन में यह सौभाग्य की बात है कि जो युव निर्वाचित हुआ है छात्र संघ का, वह युव है जो श्री जयप्रकाश नारायण जी के भ्रान्दोलन का हृदय से समर्थक है। अब उसको लेकर कुलपति थोड़ी-बहुत कठिनाई में पड़े हुए हैं। उन्होंने सोचा कि किस प्रकार से इसको रोका जाए। एक तो

कुछ इस प्रकार का वातावरण बना कि जिसकी वजह से वहाँ पर छात्र संघ काम न कर सके। जिसकी चर्चा अभी आपने भी की है। छात्र संघ के जो महामंत्री हैं, जब उन्होंने शपथ ली तो शपथ लेने के बाद विद्यार्थियों द्वारा चुने हुए महामंत्री के निष्कासन का अधिकार कुलपति को दे दिया जाए तो फिर विश्वविद्यालय में गरमी पैदा होगी ही। इसके बाद जो नतीजा निकलता है उसके लिए छात्रों को अपराधी ठहराया जाएगा या कुलपति को अपराधी ठहराया जाएगा जिनसे विद्यार्थियों के चुने हुए महा मंत्री को इस प्रकार शपथ लेने के बाद विद्यालय से निष्कासित कर दिया ? निष्कासित ही नहीं किया बल्कि ये छात्र अपनी विश्वविद्यालय की यूनियन का उद्घाटन श्री जयप्रकाश नारायण जी के द्वारा कराना चाहते थे उसे भी मना किया। मेरे हाथ में यह बनारस का "आज" पत्र है, इसमें स्वयं बनारस के कुलपति डा० श्रीमाली का वक्तव्य है। मैं श्री नूतल हसन को विशेष रूप से यह बताना चाहता हूँ कि जो उन्होंने उसमें वक्तव्य दिया है उसमें स्पष्ट यह कहा कि मैं विश्वविद्यालय के वर्तमान छात्र संघ के अधिकारियों से यह कहता हूँ कि मेरी राय में यदि ऐसी स्थिति में श्री जयप्रकाश नारायण जी यहाँ नहीं आए तो अच्छा है। इस तरह की बात को कुलपति द्वारा कहने की क्या आवश्यकता थी ? इसका परिणाम यह हुआ कि एक ओर तो छात्र संघ के महामंत्री का निष्कासन कर दिया गया और दूसरी ओर कुलपति द्वारा छात्र संघ के अधिकारियों को यह कहना कि श्री जयप्रकाश नारायण जी को विश्वविद्यालय में न बुलाया जाए, आग में भी पड़ने वाली बात हुई। इसको लेकर वहाँ पर सुबह ही छात्रों को पुलिस ने यह ऐलान करके कि चौबीस घंटे के अन्दर छात्रावास खाली कर दिया जाए, एकदम विद्यार्थियों के अन्दर बेचैनी फैला दी और इसी की वजह से आज यह स्थिति पैदा हो गई है। हिन्दू विश्वविद्यालय से छात्रों को निष्कासित कर दिया गया है और सारे विश्वविद्यालय में पुलिस की छावनी बनी हुई है। आज विश्वविद्यालय के अन्दर पुलिस ने अपना घेरा डाला हुआ है। लेकिन अब इससे एक और कठिनाई उपस्थित हो गई है और वह यह है कि जब इस प्रकार के आदेश दिए जाते हैं, तो जो बनारस के छात्र हैं, जो आजमगढ़ के छात्र हैं, जो गोरखपुर के छात्र हैं, जो गाजीपुर के छात्र हैं, वे तो अपने घर चले

जाएँगे, लेकिन जो छात्र आईलैंड के हैं, बर्मा के हैं, सीलोन के हैं, उन छात्रों की क्या स्थिति होगी ? इस प्रकार से निष्कासन के आदेश दे दिए जाते हैं, तो उनको सोचना चाहिए कि जब कभी इस तरह से विश्वविद्यालय बन्द किया जाए, तो बन्द करते समय जो छात्रों को निष्कासन के आदेश दिए जाते हैं, उसमें विशेष रूप से जो विदेशी छात्र और छात्राएँ पढ़ती हैं, उनमें थोड़ा-सा अन्तर रखना होगा, पृथक्ता रखनी चाहिए जो भारतीय छात्र हैं और विदेशी छात्र हैं, उन सबको एक रूप में और एक ढंडे से हाँकना कहां तक उचित है ? इन विदेशी छात्र और छात्राओं से यह कहना कि एकदम छात्रावास खाली कर दो और बनारस की गदौलिया में जाकर पड़े रहो या रेलवे स्टेशन में जाकर पड़े रहो, कहां तक उचित है ? इस प्रकार के जो आर्डर थे, वे छात्रों में असंतोष की आग भड़काने वाले थे और न ही समस्या के समाधान करने में सहायक ही हो सकते हैं।

दूसरी बात यह है कि इस प्रकार कुलपति के आदेश का परिणाम यह हुआ कि छात्रों की परीक्षाएँ बिल्कुल सिर पर आ गई है, उसमें बाधा पड़ जाएगी। इस प्रकार से छात्र संघ के महामंत्री को श्री जयप्रकाश नारायण जी के समर्थक होने के नाते उनके निष्कासन के आदेश दे देना और छात्र संघ को वहाँ पर कार्य न करने देने का परिणाम यह होगा कि जो 12 हजार विद्यार्थी वहाँ पर पढ़ते हैं उनका भविष्य अधकार में पड़ जाएगा। इसलिए सबसे बड़ी बात तो यह है कि जो विश्वविद्यालय की अपनी परम्परा है, हमारे देश में जो केन्द्रीय विश्वविद्यालय हैं उनका अपना एक इतिहास है। जो राज्य-स्तर के विश्वविद्यालय हैं, उनको छोड़िये, लेकिन जो केन्द्रीय विश्वविद्यालय हैं, उनकी कम-से-कम परम्पराओं की रक्षा करने के लिए हमको कुछ कदम उठाने चाहिए।

यह एक विवादास्पद बात है कि एक विद्यार्थी ने शपथ लेते वक्त इस प्रकार का भाषण दिया। मैं चाहूंगा कि इसकी जानकारी करा ली जाए और विश्वविद्यालय के वक्तव्य पर या यू० पी० सरकार के वक्तव्य पर न जाया जाए। बल्कि केन्द्रीय सरकार अपने अधिकारियों को भेज कर इसकी जानकारी प्राप्त करे। लेकिन थोड़ी देर के लिए मान भी लिया जाए कि जो वक्तव्य

**[श्री प्रकाशवीर शास्त्री]**

मंत्री जी ने पढ़ कर सुनाया है, वह ठीक है, तो अगर मैं डा० श्रीमाली की जगह पर होता तो इस प्रकार के शब्द कह भी दिए होते, तो यह काम मेरा होता कि विश्वविद्यालय के कुलपति को किसी छात्र संघ से किस प्रकार से डील करना चाहिए, कैसे उनकी भावनाओं को सम्भालना चाहिए और किस तरह से उनकी पीठ थपथपा कर काम लेना चाहिए, न कि विद्यार्थियों को निकाल कर कैम्पस से बाहर कर दिया जाए और इस तरह से छात्रों को आन्दोलन करने का अवसर दे दिया जाए। इस समस्या का समाधान इस तरह की बातों के करने से नहीं होता है क्योंकि विद्यार्थी कच्ची उम्र के होते हैं और उन्हें किस प्रकार से सम्भाला जाना चाहिए, यह बात शिक्षा शास्त्रियों को सोचनी चाहिए।

मैं अपनी बात समाप्त करने से पहले श्रंत में दो-तीन बात और कहना चाहता हूँ। एक तो यह कि इस सारी घटना की जांच के लिए उच्चस्तरीय आयोग की नियुक्ति होनी चाहिए, हाउस की कमेटी बनानी चाहिए, दोनों सदनों के सदस्य मिल कर जाएँ और देखें कि वास्तविकता क्या है, जो कहना आपका है उसमें कोई जान है या जो विद्यार्थी कह रहे हैं उसमें जान है ताकि विश्वविद्यालय का वातावरण और खराब न हो। दूसरे, छात्रों की जो उचित माँगें हैं उन पर तत्काल अनुकूल निर्णय होना चाहिए। छात्र पहले आन्दोलन करें, फिर विश्वविद्यालय के अधिकारी निर्णय लें, यह प्रवृत्ति शिक्षा मंत्रालय को रोकनी चाहिए। तीसरी बात मैं यह कहना चाहता हूँ कि हर केन्द्रीय विश्वविद्यालय में शिक्षा मंत्री को वर्ष में एक बार अवश्य जाना चाहिए, अध्यापकों के साथ बैठक करनी चाहिए, विद्यार्थियों के साथ बैठक करनी चाहिए ताकि सीधे उनका सम्पर्क हो सके और वे वहाँ की समस्याओं का सीधे अध्ययन कर सकें, बीच में राज्य सरकार और विश्वविद्यालय के अधिकारी न आएँ। दूसरे, हिन्दू विश्वविद्यालय छात्र संघ के अधिकारियों को, जिनको निकाल दिया गया है, वापस ले ताकि इस धारा को शांत किया जा सके। पीछे कुछ विद्यार्थी इसी तरह निकाले गए थे। उन विद्यार्थियों में ऐसे विद्यार्थी भी निकलें हैं—मैं एक-एक का नाम नहीं लेना चाहता—जिन्होंने 77 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं, इंजीनियरिंग के विद्यार्थी हैं। लेकिन चूंकि वे वैचारिक दृष्टि से जयप्रकाश जी के समर्थक हैं

इसलिए विश्वविद्यालय से निकाल कर बाहर कर दिए गए। पीछे छात्रों ने आन्दोलन किया तो वाइस चांसलर ने 7 छात्रों की एक छात्र कल्याण समिति बनाई। उस छात्र कल्याण समिति ने सर्वसम्मति रिपोर्ट दी कि इन प्रतिभावाली विद्यार्थियों को वापस लिया जाए। उसके बाद भी वापस नहीं लिया जाता। उपकुलपति ने समिति बनाई और उसके सर्वसम्मति मुद्दों को नहीं माना जाता तो आन्दोलन फिर बढ़ेगा। शिक्षा मंत्री स्वयं शिक्षा शास्त्री हैं, मैं चाहूँगा कि वे इस समस्या पर शांति से विचार करें और हिन्दू विश्वविद्यालय जल्दी से जल्दी खल सके इसकी वे कोई अनुकूल व्यवस्था करें।

**प्रो० एस० नूरुल हसन :** मान्यवर, जिस उम्मीद का इजहार माननीय सदस्य ने किया है मैं उसमें उनसे पूरी तरह सहमत हूँ। मैं भी आशा करता हूँ कि विश्वविद्यालय जल्द से जल्द अपना तामेल काम शुरू कर सकेगा। मैं माननीय सदस्य का बेहद आदर करता हूँ। मैं जानता हूँ कि उनके दिल को तकलीफ पहुँची उसी तरह से जैसे हर उस शस्त्र के दिल को तकलीफ पहुँची है जो यूनीवर्सिटी का खैरखवाह है, जो चाहता है कि शिक्षा की तरक्की हो।

माननीय सदस्य ने खाम सवाल यह किया कि मैं बनारस कितनी बार गया मंत्री बनने के बाद। मैं दो मर्ते जा चुका हूँ। छात्र संगठन के नुमाइन्दों से मेरी बहुत तफसीली गुफ्तगू पार साल हुई है। वहाँ के टीचर्स एसोसिएशन के डेपूटेसन से मेरी तफसीली गुफ्तगू अक्टूबर के महीने में हुई है। जब भी कोई टीचर या स्टूडेंट मुझसे मिलना चाहता है तो मैं बड़ी खुशी से उससे मिलता हूँ। मैं यह अपना फर्ज समझता हूँ कि उनकी बातें जानूँ और उनकी राय से वाकफियत हासिल करूँ। बनारस यूनीवर्सिटी के मुख्तलिफ टीचर्स व्यक्तिगत रूप में और विद्यार्थी मुझसे कई-कई मर्तेबा मिल चुके हैं—कई मर्तेबा मुख्तलिफ माननीय सदस्यों के जरिये से मिले हैं, कई मर्तेबा स्वयं मिले हैं। मुझे वाकफियत हासिल रहनी चाहिये यह बिलकुल जरूरी है, मैं इससे सहमत हूँ, लेकिन मैं चाहता हूँ कि इसी के साथ-साथ ऐसी सुरतेहाल न पैदा हो जाय कि लोग यह समझें,

किसी यूनीवर्सिटी के तालिबानों यह समझे कि उनकी यूनीवर्सिटी शास्त्री भवन चला रही है और हर बात में मिनिस्टर कोर्ट आफ अपील बने हुए हैं। अगर यह हुआ तो उसमें यूनीवर्सिटी का हाल बेहतर नहीं होगा, उसमें कठिनाइयाँ होंगी। मैं समझता हूँ कि इसके ऊपर आम तौर पर एप्रोमिट होगा कि हमें यूनीवर्सिटी की माटोनोमी को जहाँ तक हो सके बरकरार रखना चाहिये।

दूसरी बात यह है कि माननीय सदस्य ने कम्पेरेटिव फिगर्स बनारस हिन्दू यूनीवर्सिटी और अलीगढ़ यूनीवर्सिटी के खर्च की बी। मेरे पास दो वर्षों की फिगर्स हैं।

श्री प्रकाशचोर शास्त्री: मैंने नहीं दी है, ये यू० जी० सी० की रिपोर्ट में दी हुई है।

श्री० एस० नूतन हसन: मेरे पास लेटेस्ट फिगर्स मौजूद हैं जिन्हें मैं हाउस के सामने पढ़ देता हूँ। उससे माननीय सदस्यों को अन्दाजा हो जाएगा। सन् 1972-73 में प्लान के तहत—मैं इसलिये कह रहा हूँ प्लान पीरियड के लिये एक ग्रान्ट निर्धारित की जाती है जब उसमें से यूनिवर्सिटियाँ ड्रा करती रहती हैं। कभी कोई ज्यादा ड्रा कर लेती है, कभी कोई कम ड्रा करती है। बहरहाल, 1972-73 के प्लान के दौरान अलीगढ़ को एक करोड़ 21 लाख की ग्रान्ट रिलीज हुई और बनारस हिन्दू यूनीवर्सिटी को 2 करोड़ 12 लाख की। नान-प्लान में अलीगढ़ को 2 करोड़ 42 लाख और बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी को 3 करोड़ 10 लाख की ग्रान्ट रिलीज हुई। कुल मिला कर प्लान्ड और नान-प्लान्ड में 1972-73 में अलीगढ़ को 3 करोड़ 63 लाख और बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी को 5 करोड़ 22 लाख की ग्रान्ट मिली। 1973-74 में प्लान में अलीगढ़ को 86 लाख और बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी को 2 करोड़ 29 लाख और नान-प्लान्ड में अलीगढ़ को 2 करोड़ 66 लाख और बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी को 3 करोड़ 40 लाख। इस तरह से कुल मिला कर 3 करोड़ 52 लाख अलीगढ़ को और 5 करोड़ 59 लाख बनारस हिन्दू यूनीवर्सिटी को

रिलीज हुई है। माननीय सदस्य ने यह कहा कि जातिवाद वहाँ पर है। इसको खबरें जनावे-वाला मुझ तक भी पहुँची है और मुझको इस का बड़ा दुख है। मुझे इस बात की चिन्ता भी है और इस बात से मैं परेशान भी हूँ और इस को मैं बहुत ही इन्डिस्पेन्सिबल समझता हूँ कि पढ़े लिखे लोग भी कास्टिज्म के इतने शिकार बन जायें कि वह अपने सोचने में और व्यवहार में कास्टिज्म से मुतासिर हों और इस सिलसिले में मैं बिल्कुल सहमत हूँ माननीय सदस्य से कि इस कास्टिज्म की या सब-कास्टिज्म की जो खबरें आ रही हैं उनके खिलाफ एक पब्लिक प्रोपीनियन, एक वातावरण ऐसा बनना चाहिये कि जिस से पूरे मुल्क में खास तौर पर यूनिवर्सिटीज में यह चीज न हो और यूनिवर्सिटीज में तो इस की कोई जगह नहीं होनी चाहिये।

पोलिटिकलाइजेशन का जहाँ तक सवाल है, मान्यवर, मैं यह राय तो कभी नहीं दूँगा कि विद्यार्थियों को पालिटिक्स में दिलचस्पी नहीं लेनी चाहिये और विद्यार्थी नान-पोलिटिकल हो जायें। मैं यह समझता हूँ कि बहुत से माननीय सदस्य यहाँ ऐसे हैं और आप का यह नाचीज खादिस भी उन्हीं में है कि जिस ने अपने विद्यार्थी होने के जमाने में पालिटिक्स में दिलचस्पी ली। लेकिन एक बात पर मैं पूरी तरह से सहमत हूँ और मुझे इस की बेहद चिन्ता है और मैं आप के द्वारा इस सदन से और पूरे देश से यह अपील करना चाहता हूँ कि कुछ भी लड़ाई जगड़ा पालिटिक्स का हो, लेकिन बराब मेहरबानी हमारे एजुकेशनल इंस्टीट्यूशन्स का अगर मियासत का प्रस्ताव इस तरह बनाया गया कि जिस में विश्वविद्यालय और दूसरे एजुकेशनल इंस्टीट्यूशन डिस्ट्रक्ट हो जायें कि जिस से पूरी एकेडेमिक लाइफ डिस्ट्रक्ट हो जाय, कि जिस से वह वक्त जो विद्यार्थियों को अपनी जिन्दगी में मिलता है वह खो जाय और जो फिर कभी उन को हा मिल न हो पाये और जो मुल्क इतना पैसा खर्च करता है, क्योंकि यह देश का ही पैसा है, वह सब जाया हो जाये और इस के जो असरात मुल्क के भविष्य पर पड़ने वाले हैं

[श्री० एस० नूरुल हसन]

वह बुरे हों, तो मैं यह जरूर अपील करूंगा— इस में कायदे कानून बनाने की बात तो मेरी समझ में नहीं आती, लेकिन मैं अपील करूंगा कि इस पर तमाम देश के राजनीतिक लीडर्स को विचार करना चाहिये कि ऐसी बात न होने पाये कि जिस से हम अपने विश्वविद्यालयों को और अपने एजुकेशनल इंस्टीट्यूशन्स को एक पोलिटिकल स्टुडन का एरीना बना दें। आइडियालाजिकल स्टुडन जरूरी होनी चाहिये। क्योंकि मैं समझता हूँ कि जब तक क्लैश आफ आइडियाज नहीं रहेगा तब तक यूनिवर्सिटीज आगे नहीं बढ़ेंगी। लेकिन उस के फलस्वरूप यह नहीं होना चाहिये कि वहां इंटीमिडेशन और वायलेंस या इस किस्म को और चीजें हों, क्योंकि अगर एकेडेमिक लाइफ में यह चीजें आयेंगी तो जो एकेडेमिक लाइफ की खूबी है, जो उस की विशेषता है उस को बहुत बड़ा धक्का पहुंचेगा।

मुझे इस बात पर जरा ताज्जुब होता है कि और कोई एतराज करता तो कर लेता, लेकिन जो मौजूदा वाइस चांसलर बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी के हैं उनके बारे में इस मुल्क में कौन नहीं जानता और इस सदन में बहुत से लोग हैं जो उनको अच्छी तरह जानते हैं। जब वह यहां शिक्षा मंत्री थे तो, और उस के बाद माननीय सदस्य उन को बहुत बहुत अच्छी तरह से जानते हैं और यह जानते हैं कि उन्होंने किस तरह से शिक्षा मंत्री की हैसियत से यहां काम किया है। और किस तरह से मैसूर विश्वविद्यालय में उन्होंने काम किया और बड़ी अच्छी छिदमत अंजाम दी। उनको अब अपनी पार्टी के सदस्य होने के नाते अपनी राय इस तरह नहीं बसलनी चाहिये। जो शिकायत उनकी पार्टी के लोग किया करते हैं उसके ऊपर जिस आदमी को सारी ज़िन्दगी हमने देखा उसको यह समझ लेना कि वह बिलकुल बदल गया, यह सही नहीं है।

मैं अर्ज करना चाहता हूँ कि कुछ फैक्ट्स जो माननीय सदस्य को दिये गये हैं उनमें कुछ डेट की भी गड़बड़ है। जहां तक मुझे सुनने में आया है। उन्होंने बाबू जयप्रकाश नारायण जी की चिट्ठी

भेजी इस इंसिडेंट के बाद जिसका मैंने अभी जिक्र हाउस में किया है। इस इंसिडेंट के पहले उन्होंने नहीं कहा कि जयप्रकाश जी वहां के छात्र संघ का उद्घाटन न करें।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री: मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि बनारस से जो पत्र निकलता है आज जो वहां का प्रमुख पत्र है, यह उसने कहा है कि बनारस विश्वविद्यालय बन्द होने के बाद डा० श्रीमाली ने प्रेस स्टेटमेंट दिया है। इसमें उन्होंने कहा है कि मैंने विद्यार्थियों से आग्रह किया था कि जयप्रकाश जी अगर यहां न आयें तो अच्छा होगा क्योंकि परिस्थितियां यहां अनुकूल नहीं हैं। मैंने अपनी ओर से नहीं कहा, यह वहां के पत्र ने कहा है।

श्री० एस० नूरुल हसन: मैं कंटेडिक्ट नहीं करना चाहता हूँ। लेकिन जहां तक मैंने सुना है, मुमकिन है टेलीफोन पर सुनने में कुछ गड़बड़ हो गई हो, लेकिन मैं इसराय नहीं करता हूँ। लेकिन जहां तक मुझको पता लगा है, जिस परिस्थिति का जिक्र किया है वह इस इंसिडेंट के जो रात को हुआ उसके बाद का उन्होंने कहा जब जयप्रकाश जी बनारस के बाबतपुर एयरपोर्ट पर पहुंचे तब उन्होंने चिट्ठी भिजवाई।

यह कहना कि . . . . . (Interruptions)

SHRI N. G. GORAY (Maharashtra): The Vice-Chancellor says that disturbances took place before his arrival-That's what you want to say?

PROF. S. NURUL HASAN: This is my information. But my difficulty is that I have been trying to get part of the information on telephone and through telegrams, waA...(Interruptions).

DR. K. MATHEW KURIAN (KERALA): Use telepathy... (Interruptions):

PROF. S. NURUL HASAN: I wish I had that power. But my good friend will teach it to me sometimes. It will be very useful in answering \_\_\_\_\_

MR. DEPUTY CHAIRMAN: God far-bid !  
If you borrow it from Dr. Kurian, you will  
have a hell of trouble in the House...  
(Interruptions).

**प्रो० एस० नूरुल हसन :** यह आरोप जो लगाया गया है कि वाइस चांसलर ने यह कोशिश की कि यूनियन को फंक्शन न करने दिया जाये, यह मैं समझता हूँ कि बड़ी ज्यादाती है कि यह कहा जाये इसलिये कि मैं उसकी तफसील में नहीं जाना चाहता हूँ कि क्यों वहाँ छात्र संघ के आफिस बियर्स के इनस्ट्रालेशन में देर हुई। अगर कोई पूछेगा तो मैं उसको अर्ज भी कर दूंगा। लेकिन एक दिलचस्प चीज यह है कि बावजूद उन तमाम इरेगुलेरिटीज के जो यूनियन प्रेसिडेंट के दाखिले में हुई उस वाइस चांसलर के मशविरे से तीन अध्यक्ष जो छात्र कल्याण समिति के मेम्बर थे उन्होंने श्री मोहन प्रकाश से 10 तारीख को तफसीली बात की। उस गुप्तगू के बाद जो उनके समझौते हुए उनके तीन पाइंट थे। अगर आप इजाजत दें तो मैं वह पढ़कर सुना दूँ ताकि हाउस को उनकी जानकारी हो जाये—

(1) The Chhatra Kalyan Samiti has an effective and decisive role to play in solving problems of students through dialogue and discussion between students and teacher members of the S:imili.

(2) The newly elected President will extend his full support and hearty co-operation to the teacher members of the Samiti in finding satisfactory solutions to student problems through a frank exchange of ideas and through sincere efforts to reach a consensus.

(3) Any bitterness or resentment created by the past will be forgotten by all concerned, and a new chapter opened in establishing amity and goodwill between students, teachers and administration.

मैं यह कहूंगा कि वाइस चांसलर ने इन्हीं सिफारिशों के मुताबिक 13 तारीख मुकर्रर की जिसमें शपथ दिलाई जाये नये आफिस बेधरस को। इस के बाद भी छात्र संघ के सेक्रेटरी ने ऐसे अलफाज इस्तेमाल किये जो हमारी परम्परा के खिलाफ हैं और जिस के कि माननीय सदस्य बहुत बड़े समर्थक हैं और हम को बड़ा नाज है उन पर जिस जगह से भारतीय परम्परा की बातें उठाते रहते हैं वहाँ भी और सारे देश में उसकी चर्चा करते रहते हैं। बहरहाल मैं यह अर्ज करूंगा कि ऐसा रवैया अश्लिष्य करना, अपने वाइस चांसलर को इस तरह से कहना और उस वाइस चांसलर को जिसकी खिदमत से पूरा मुल्क बाकिफ है, मैं समझता हूँ कि किसी तरह से सराहना नहीं जा सकता। एक तरफ तो वाइस चांसलर के मुँह पर ऐसी बातें कही जायें और दूसरी माननीय सदस्य यह कहें कि इस पर इन्कवारी करायी जाये कि वाइस चांसलर झूठ बोल रहे हैं यह सही बोल रहे हैं मैं समझता हूँ...

**श्री प्रकाशवीर शास्त्री :** मैं तो पूरे मामले पर इन्कवारी की बात कह रहा हूँ।

**प्रो० एस० नूरुल हसन :** इस किस्म के अलफाज इस्तेमाल हों और उसके बाद यह कहें कि जा कर मैं जांच कराऊँ कि वाइस चांसलर ठीक कह रहे हैं या गलत कह रहे हैं यह बड़ा मुश्किल है। मैं यह अर्ज करना चाहता हूँ कि वाइस चांसलर ने पूरी कोशिश की थी कि ऐसा वातावरण बने जिसमें छात्र संघ पूरी तरह से और अच्छी तरह से काम कर सके इसीलिये मैंने आपको यह पढ़ कर सुनाया। यह बड़ी बदकिस्मती है कि स्टूडेंट्स यूनियन के सेक्रेटरी ने पहले तो खीटन किया और बाद में नामुनासिब अलफाज इस्तेमाल किये, नामुनासिब लहजा इस्तेमाल किया और उसके बाद रात को 11 बजे जमा होने के बाद करीब 12 बजे रात को वाइस चांसलर के घर पर चढ़ाई कर दी। यह जिम्मेदारी कि यूनियन को पूरी तरह से फंक्शन नहीं करने दिया मेरी राय में यह जिम्मेदारी यूनियन के ऊपर कतई नहीं आती।

[श्री० एस० नूतल हसन]

जहाँ तक फोरेन स्टूडेंट्स का सवाल है उस के बारे में टेलीफोन पर मुझे साफ नहीं हुआ। जहाँ तक मेरी जानकारी है फोरेन स्टूडेंट्स को होस्टल से हटाया नहीं गया है फोरेन स्टूडेंट्स होस्टल ही में है। मुमकिन है समझने में कुछ गड़बड़ हुई हो मैं उसको मजबूत चूँक अब कर लूँगा। लेकिन आम तौर पर यह हुआ है और जहाँ तक मैं समझता हूँ फोरेन स्टूडेंट्स को हटाया नहीं गया है।

श्री ओज्ज् प्रकाश त्यागी: आपकी टेलीफोन पर बात कैसी हुई कि आपको डाऊट रह गया?

श्री० एस० नूतल हसन: मुझे पता नहीं आप टेलीफोन पर बात करते हैं या नहीं।

श्री लोकनाथ मिश्र: हम लोगों को बान तो देश होती है इसलिये साफ नहीं सुन सकते। आप को तो क्नीयर सुनना चाहिये।

श्री० एस० नूतल हसन: टेप जिसे आप टप समझते हैं वह टेप नहीं होती वह तो कर्नलेशन में रिकॉर्ड होता है इससे हम को भी मुश्किल पड़ती है  
(Interruptions)

श्री प्रकाशबोर शास्त्री: समाचार-पत्रों में यह आया है कि विदेशी छात्रों को भी होस्टल से निकाला गया है।

श्री० एस० नूतल हसन: हमें जो पता लगा है उसमें यही है कि विदेशी छात्र वहीं पर हैं। जहाँ तक विदेशी स्टूडेंट्स के मुतालबों का सवाल है मैं समझता हूँ पूरी तरह से वाइस चांसलर इन मुतालबों को सौर करते रहे हैं और इन मुतालबों को जहाँ तक मुमकिन हुआ, पूरा किया गया है। जहाँ तक इस बात का सवाल है कि स्टूडेंट्स के खिलाफ एक्शन लिया गया इस बारे में मेरा कहना है कि पहले जितने एक्शन लिये गये वे हार्ड वावर जुडिशियर पर्सनेलिटी को इन्कवायरी के बाद ही यूनिवर्सिटी ने एक्शन लिया था।

मैं इस बात को खत्म करने के बाद यह धरील करता हूँ कि इस आशा को जाहिर करने में सदन

के तमाम हिस्से का यह असर होगा कि लोग अपना दबाव, अपना प्रेशर इस्तेमाल करेंगे जिससे नामेलसी यूनिवर्सिटी में आ जाये।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: We have taken exactly half an hour. Only one Member has sought the clarification. There are half a dozen other names.

SHRI LOKANATH MISRA: I will not take long.

SHRI KALYAN ROY: Is my name there?

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, your name is not there.

SHRI LOKANATH MISRA (Orissa): Sir, the Banaras Hindu University has to its credit the most eminent personalities of this country who were associated with its creation, with its maintenance and with its governance also. I think, the Banaras Hindu University has also created many of our eminent personalities of the country, may be, including yourself, Sir. I do not know.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I happen to be a product of the Banaras Hindu University.

SHRI BHUPESH GUPTA: Sir, is it permissible to flatter you in order to get more time?

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I do't think, I will be flattered. Mr. Bhupesh Gupta, by now you should have known that no amount of flattery will deflect me.

SHRI LOKANATH MISRA: Sir, I am not in the habit of making any reflection on the Chair. It is his privilege all the time.

SHRI N. G. GORAY: Without offending you, one can take more time.

SHRI LOKANATH MISRA: I had the opportunity of knowing the present Vice-Chancellor—he was a Member of this House



and a member of the Government—for two year\* during my early years in Parliament when he was the Deputy Minister of Education. He ran into difficulty even here in connection with the Banaras Hindu University. I faintly recollect that he had brought in some Bill because of his tremendous attachment, probably, to the Banaras Hindu University. And he ran into a terrible rough whether in the House itself. May he, as a result of that particular action, he was dropped by the Late Pandit Jawahar Lai Nehru from the next Ministry. I do not know...

SHRI D. N. DWIVEDI (Uttar Pradesh) : It is not correct...

SHRI LOKANATH MISRA: But you are too young to say that.

SHRI D. N. DWIVEDI: I was involved in that movement and so, I know more than you.

SHRI LOKANATH MISRA: May be, your knowledge is superior to mine always. But you are too young to vouchsafe that. Sir, ;<; I was saying...

SHRI J. S. ANAND (Punjab): What is the age that will satisfy you for this vouchsafing?

SHRI LOKANATH MISRA: At least, there should be some kind of involvement with Shrimali to vouchsafe a matter like this. Sir, as I was saying, having taken up the Vice-Chancellorship of the Banaras Hindu University, which has a great tradition behind, Dr. Shrimali should have probably fared very well if he had the administrative capability and the capability to deal with the students. From the very start, when he took over as the Vice-Chancellor, there has been trouble in the Banaras Hindu University either by the students' union or by the teachers or by...

SHRI J. S. ANAND: The trouble was there even before him.

SHRI LOKANATH MISRA: May be, if he was a good administrator, he would have dealt with it. What we need is good administration. We do not want Dr. Shrimali in person. Therefore, if there was trouble before, then that Vice-Chancellor was incapable of dealing with the situation. I herefore, what we need is a more capable Vice-Chancellor. We do not want Dr. Shrimali personally. So, the CPI argument is always like that. If it suits the Soviet Union and the CPI, then it is all right. If it does not suit them, then everything is wrong. That is how they argue their case . . .

*(Interruption).*

MR. DEPUTY CHAIRMAN : Do'nt get diverted to the CPI.

SHRI LOKANATH MISRA: That is their attempt all the time. I do not wish to get diverted.

SHRI KALYAN ROY (West Bengal): Sir, it is impossible to divert his attention from the loyalty to the monopoly class.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: It is very easy. When you mention CPI, he gets diverted.

SHRI LOKANATH MISRA: According to Mr. Kalyan Roy, if I have any loyalty to the monopoly class, then I have some loyalty in the country. I don't have, like Mr. Kalyan Roy, loyalty to Mr. Khrushchev and Mr. Kosygin . . .

*(Interruption).*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, you continue with your point.

SHRI LOKANATH MISRA: Sir, as I was saying, I was expecting Dr. Shrimali to behave better and he has failed. What we expected out of him in course of time, he has belied.

AN HON. MEMBER: What an astrologer you are?

SHRI LOKANATH MISRA: There are three unions in the Banaras Hindu University. Sir, you know, probably, much

(Shri Lokanath Misra)  
better than I do about the working there. There are three unions. And it has been the attempt of Dr. Shrimali all the time to somehow install either the Congress union or the sister union of the Students' Federation in the University. But he has not been able to do it because of a predominant opinion against him. He has been partisan even in the case of appointments of teachers and professors; this has been the allegation all through against him because he wants only either the Congress-men or the C.P.I. people.

Sir, what we expect in a University like this is that the Vice-Chancellor should be a man of great scholarly eminence in the country. He should have administrative capability and at the same time should not be arrogant and should not be a Bureaucrat. He should not behave like a dictator.

*(Time bell Rings)*

Sir in this case unfortunately when this Union was elected, he delayed giving them or handing over the charge of the Union to them. They ran here. Some of them came here and met me and met Mr. Raj-narain and went about saying that they are denied their rightful charge of taking over the Union and that the Vice-Chancellor was standing in the way. That showed how partisan he was and he delayed the matter as much as he could; thereby creating bitterness even in the initial stages. They came here, they may have seen the Education Minister also, I do not know. But, somehow, ultimately they forced the Vice-Chancellor to hand over the charge to them. And, the day the charge was handed over, may be he must have felt very much ruffled against the Vice-Chancellor and may have said something against any kind of violence in the country and any kind of student unrest, unreasonable student unrest, in the country. I have been talking about it but unfortunately the Congress Party and the C.P.I. are the people who have been creating all the unrest in the country.

SHRI J. S. AN AND : You have no party and no base to do anything.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Do not get diverted.

SHRI LOKANATH MISRA: But, Sir, I have to reply to things particularly when they come from Members belonging to parties whose bases are in and whose dictations come from, the Soviet Union. They cannot go unreplicated.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Lokanath Misra, you are very sensitive when you hear something from that side. Actually, I did not hear what he said. At least, I did not hear. You also ignore him.

DR. K. MATHEW KURIAN (Kerala): Sir, Chairman is not supposed<sup>1</sup> to hear, but Members have to hear.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: But, not when Members are sitting and talking something.

SHRI LOKANATH MISRA: Sir, if action had been taken by the Vice-Chancellor, then there would not have been any kind of resentment from the leaders of the Students' Union who have taken over. Only because it was delayed and delayed purposely and they knew that the Vice-Chancellor did not want to hand over to them the charge because they were not to his liking, there was some misunderstanding amongst them; but he, as the Vice-Chancellor, who is supposed to be the guardian of the students, should have talked to them, should have sorted it out with them. Young men are not to be treated in this harsh manner; if a soft word, little love and affection had flowed down from the Vice-Chancellor, probably they would have mellowed down.

*(Interruptions)*

Sir, he tried to behave like a dictator. Therefore, Sir, I completely and fully agree with the demand made by Shri Prakash Vir Shastri that there should be a full-fledged inavriy into the working of the Banaras Hindu University and also identify the defects in its working. Dr. Shrimali

should immediately be withdrawn from I here and a new Vice-Chancellor; who is regarded in this country as a great scholar and before whom the students would automatically bow down their head because of his scholarship, should be installed there.

DR. VIDYA PRAKASH DUTT (Nominated): Where are the students who would bow down before scholarship, I would like to know.

*(Interruptions)*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Let him continue.

SHRI LOKANATH MISRA: Let me suggest some good things at least. Sir, what I suggest is that Dr. Shrimali should immediately be withdrawn and, as I suggested, somebody, who is respected in this country for his great scholarship, should be installed there as the Vice-Chancellor. Now, Sir,...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, I think, that will do.

SHRI LOKANATH MISRA: If you ask me to sit down, I will sit down.

PROF. S. NURUL HASAN: Sir, first of all I would like to express my strong disagreement with my honourable friend regarding his characterisation of Dr. Shrimali. I think that he is one of the very distinguished educationists of the country and that there is no question of Government lacking in showing respect to him as a very distinguished and eminent Indian and educationist. Unfortunately, Sir, people do not bow their heads before scholarship and show respect to scholars. There are too many persons whose examples can be quoted and I have no doubt that even if my learned friend were to be given such a responsibility he would soon discover that there are many who would take a contrary view in spite of all the love and affection that he may show to the students. I entirely agree that the students have to be treated with love and affection; there can-

not be two opinions on it; but when they behave as students. But when they raid the house of a Vice-Chancellor at midnight and start breaking open into his house climbing up the backstairs, then I am sure he would agree that this is not a behaviour becoming of students and I do not think that one can expect that people who are motivated in such a way can only be dealt with by love and affection and the incident to which a reference has been made in the House and the many incidents which have occurred in various parts of the country where Vice-Chancellors have been attacked—one of them has been murdered and such things have happened are doings of a small section of the students but, nevertheless, public opinion should condemn these acts of violence and intimidation.

Sir, the appointments in the Banaras Hindu University are made in accordance with the statutes. Whenever any person has felt aggrieved and has made a representation to the Visitor, then in accordance with the Act and statutes of the University all the representations have been very carefully considered and examined and till now—I am subject to correction because I am speaking from memory—I do not remember any case where the Visitor came to the conclusion that any irregularity had been committed.

Sir, as I have said, this House knows undoubtedly that a few years ago the working of the Banaras Hindu University was carefully reviewed by a Committee headed by no less a person than Mr. Justice Gajendragadkar and it submitted its report which is known to this House—which has been discussed in this House—and therefore the question of appointing another committee does not arise.

Sir, I have read out from this the understanding of the Chhatra Kalyan Samiti to show to you that the unfortunate incident of violence and abuse that happened had nothing to do with the delay. The delay was because of irregularity in the admission of the student because of court cases and because of a writ petition in the Allahabad High Court. But, nevertheless,

[Prof. S. Ntirul Hasan] at the request of the Vice-Chancellor—as I read out—three teachers went into the matter and the whole question, difference of opinion, was sorted out and admission of the student was regularised.

SHRI M. KADERSHAH (Tamil Nadu): I would like to put only one question. The Government is setting up a bad piece-dent by appointing politicians as Vice-Chancellors. Those who win elections become MLAs, MPs or Ministers but those who are defeated become Governors or at least Vice-ChanceUors in this Government. This is the root cause of all evils prevailing today in most of the universities in this country. May I ask the hon. Minister whether the Government will seriously consider to discontinue this practice of appointing politicians as Vice-Chancellors irrespective of their previous educational background and experience? It is surprising to note that the Government is unable to find sufficient qualified persons in the teaching line to be appointed as Vice-Chancellors.

DR. VIDYA PRAKASH DUTT: Do you think self-respecting people or self-respecting academicians would agree to be appointed as Vice-ChanceUors any more?

SHRI M. KADERSHAH: There may be exceptions like Mr. V. P. Dutt. Has the Government reviewed the working of the BHU during the tenure of Dr. Trigunti Sen when the University was almost free from all these troubles and also will the Government take a decision not to impose politicians on the teaching side too? When persons with political leanings are appointed they go to the university with political background of their party to which they belong and this naturally reflects in their day-to-day working and the managing of the affairs of the institution. It is high time that the Government listened to the humble suggestion and followed the recommendations made by the former Education Commissions appointed so far. It is deplorable that the recommendations of the Commissions appointed by Government itself are not accepted.

PROF. S. NURAL HASAN: Sir, my task is made very easy because the hon. Member is attempting to knock at the open door. Sir, the Vice-Chancellor of Delhi University is a distinguished professor of Chemistry. The Vice-Chancellor of Aligarh Muslim University is a distinguished professor of Economics. The Vice-Chancellor of Banaras Hindu University is a distinguished educationist with a Ph.D. in Education. The Vice-Chancellor of Viswa Bharuti University is a distinguished professor of History. The Vice-Chancellor of North Eastern Hill University is a very distinguished Principal who has been in teaching line for a long time in Madras. The Vice-Chancellor of the University of Hyderabad is again a very distinguished professor of Chemistry. Therefore, the Central Government has been very careful in offering vice-chancellorship only to very eminent academicians.

श्री हर्षदेव मालवीय (उत्तर प्रदेश): मान्यवर, पहली बात तो मैं यह कहना चाहता हूँ कि जो कुछ हो रहा है उससे सबसे भारी दुख पीड़ित मदनमोहन मालवीय की आत्मा को होगा जिन्होंने उसको स्थापित किया। उनको विशेष रूप से दुख इसलिए होगा कि इस गड़बड़ को करने वाले वे लोग हैं जो हिन्दू धर्म के धर्म ध्वजाई बनने हैं। मैं प्रकाशवीर प्रान्सी की भावनाओं से हमदर्दी रखता हूँ। गंभीर आदमी है, उन्होंने अपने ढंग से ठीक बातें कही, लेकिन दिक्कत यह है कि वे रंगीन चश्मे से हर चीज देखते हैं। जिसको पोलिया की बीमारी हो जाती है उसको सब चीज पीली दिखाई पड़ती है। उन्होंने जयप्रकाश जी के कंधे पर रख कर बन्दूक चलाई, जयप्रकाश जी न आने पाए इसलिए सब गड़बड़ हो गई, लेकिन जो जनसंघ के लोग, आर० एस० एस० के लोग कर रहे हैं उसकी तरफ से उन्होंने आँखें मूंद ली। मैं दुख के साथ कहना चाहता हूँ कि बी०एन० यू० में जो हो रहा है वह एक प्रकार से जो फासिस्टो षड्यंत्र अपने देश में हो रहा है, गड़बड़ करके बदमाशी करके, जोर-जबरदस्ती करके येन-केन प्रकारेण व्यवस्था को अस्तव्यस्त कर दो, उसके एम्ब्रायो फार्म में यह चीज हो रही है। अपने कथन की सत्यता को साबित

करने के लिए आपकी आज्ञा से मैं कहना चाहूंगा कि 72 में भी इसी प्रकार का झगड़ा हुआ था और 7 दिसम्बर 72 को बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी बन्द कर दी गई थी। मैं ज्यादा समय नहीं लूंगा, लेकिन उस समय बाइस चान्सेलर साहब ने एक कमेटी बनायी और उसकी रिपोर्ट मेरे पास है। उस कमेटी के अध्यक्ष थे जस्टिस ज्ञानेन्द्र कुमार, जज, इलाहाबाद हाई कोर्ट। और उस में दो और सदस्य थे। एक थे प्रो० प्राण नाथ, प्रोफेसर आफ मेथेमेटिक्स इन्स्टीट्यूट आफ टेक्नीलाजी, बी० एच० यू० और दूसरे थे प्रो० भार० बी० सिंह, हेड आफ दि डिपार्टमेंट आफ जैनेटिक्स एंड प्लान्ट ब्रीडिंग, फैकल्टी आफ एग्रीकल्चर, बी० एच० यू० तो उन्होंने वह कमेटी 23-12-72 को बनायी और उस समय जो हीरो थे उन का नाम था महेंद्र बहादुर सिंह। वह उस समय उपाध्यक्ष बने गये थे और छात्र संघ का अध्यक्ष था स्टूडेंट फीडबैक का एक विद्यार्थी महेंद्र बहादुर सिंह ने उस समय एक पर्चा निकाला और गाँधीय वहाँ का एक जनसंघी पेपर था उसमें वह छात्र भी था। उन की शिक्षापत्र थी यह कि इंडो-सोवियत फ्रेंडशिप सोमास्ट्री के डा० श्रीमाली जो प्रेसीडेंट बन गये हैं यह एक बड़ा पाप हो गया। जो जयदासजी महेंद्र बहादुर सिंह ने इस्तेमाल की उसके संबंध में वह कमेटी जो कहती है, उसे मैं उस रिपोर्ट में कोट कर रहा हूँ।

"Mabendra Bahadur Singh appeared before this Committee, No evidence has been produced in Support of the ..."

SHRf LOKANATH MISRA : With the CBI report, the cat is now out of the bag.

SHRI HARSH DEO MALAVIYA:

"No evidence has been produced in support of the aforesaid serious allegation against the Vice-Chancellor and the Registrar; nor is there anything to show that there is any basis or foundation for the wild, abusive allegation obviously made with a view to bring into disrepute high and responsible officers like the Vice-Chancellor, the Registrar and the Public Relations Officer of the University."

4 RSS/75—6

दूसरे उसी समय वहाँ के अध्यापकों ने एक प्रस्ताव पास किया। उस की भी तकल मेरे पास है। उस में अध्यापक लोग कहते हैं, सारा मुना कर मैं आप का अधिक समय नहीं लेना चाहता, केवल दो लाइनें पढ़ कर मुनाता हूँ। यह अध्यापकों की मीटिंग हुई थी 9 दिसम्बर 1972 को, और उस में ही उन्होंने एक प्रस्ताव पारित किया उस का मैं एक प्रश्न पढ़ कर मुना रहा हूँ:

"हम अध्यापकों को उन छात्रों, विशेषकर छात्र संघ के उपाध्यक्ष और महासंघी जो विद्यार्थी परिषद् के हैं और जिन्हें निष्कामिन छात्रों और धोषित अतिरिक्तकारियों का सहयोग प्राप्त है, द्वारा धरनाये गये तरीकों पर बड़ी चिन्ता है जिनके द्वारा उन्होंने संपूर्ण विश्वविद्यालय में अराजकता की स्थिति उत्पन्न कर दी जिसमें आगे चल कर अग्निकांड, लूट पाट अध्यापकों पर प्रहार और अन्य हिंसात्मक घटनाएँ हुई। ऐसे समय में जब कि कुनपति तथा उनके द्वारा नियुक्त समितियाँ छात्र प्रतिनिधियों से सार्थक वार्तालाप के लिये प्रस्तुत थीं, बाहरी तत्वों की सहायता से छात्र संघ के उपाध्यक्ष और महासंघी भ्रष्ट प्रवृत्तियों का आयोजन करने लगे और इस प्रकार समस्या के शांतिपूर्ण हल का दरवाजा बंद कर दिया।" फिर वह कहते हैं: "अनिच्छ और शोक होता है कि बाहरी लोगों की सहायता से मूठों भर छात्रों ने ऐसे उपद्रव खड़े किये जिन से प्रांगण में कानून और व्यवस्था समाप्त हो गयी तथा संपूर्ण अध्यापक समुदाय अमहायता का अनुभव करने लगा।"

यह 1972 की बात है और उन्हीं के भाई बिरावर आज यह कर रहे हैं। मैं दो तीन प्रश्न पूछना चाहता हूँ। मैं यह स्पष्ट करना चाहता था कि जो आज काशी विश्वविद्यालय में हो रहा है वह केवल राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और जनसंघ द्वारा कराया जा रहा है और वहाँ पर आपन पुन पराप्त छोड़ा बहुत नहीं तो थोड़ा थोड़ा चली बात चली आ रही है। वहाँ पर राजनारायण जी की भी एक परंपरा चली आती है जिनके रविवे को हम लोग रोज ही यहाँ कलन कुछ देखते हैं। उन के भी वहाँ चेले चाटे हैं और वहाँ पर समाजवादी युवजन सभा और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ इन दोनों का

[श्री हर्षदेव मालवीय]

मेल हो गयी है और ये दोनों वहाँ मिल कर यह सब अचरखा कर रहे हैं। तो मैं माननीय मंत्री जी से यह प्रश्न करना चाहता हूँ कि क्या मंत्री जी यह आश्वासन देंगे कि जो टुडडिंग करने वाले या जो वहाँ अशिश्ट विद्यार्थी हैं उन पर कड़ी कार्यवाही की जायगी। नो मर्सी शुड बी गोन टु देम। और दूसरी बात मैं यह जानना चाहता हूँ कि विश्वविद्यालय के उपकुलपति के घर पर आक्रमण I.P.M. करना कोई बात होती है? टीचर के घर जाकर उसे जला दो यह कोई बात है? क्या उपकुलपति की स्टाफ की सुरक्षा का आप पूरा प्रबंध करेंगे चूँकि वह केन्द्रीय विश्वविद्यालय है? इस और आपका ध्यान जाना चाहिए।

तीसरे, क्या विद्यार्थियों के जो वास्तविक शिवांमिज हैं, अगर हैं तो उनको भी आप तुरन्त पूरा करेंगे? मैं चाहता हूँ कि उस और भी तुरन्त ध्यान दिया जाए और जो उनके वास्तविक शिवांमिज हैं उनको दूर किया जाए।

चौथी बात मैं कहना चाहूँगा कि यह आवश्यक है कि एक पार्लियामेंट की कमेटी वहाँ जाये। सबसे बड़ा विश्वविद्यालय भारत का यह है, आखे दिन वहाँ घपला होता है। मैं समझता हूँ कि एक पार्लियामेंट्री कमेटी माननीय मंत्री बनायें जो शोध अपनी रिपोर्ट दें। क्या इसको मंत्री महोदय स्वीकार

PROF. S. NURUL HASAN : Sir, 4 questions have been asked by the hon. Member. The first is that no mercy should be shown to the miscreants. Sir, it is for the University to take such action as it deems proper. But whatever action the University takes, we will give full support to the University in trying to maintain discipline as well as academic standards.

Secondly, Sir, the question has been asked about the security of the Vice-Chancellors and teachers. Sir, I understand that the Government of Uttar Pradesh is fully seized of the situation and is taking all possible steps.

DR. VIDYA PRAKASH DUTT: Is there any scheme for taking up in-

*public importance*

insurance for the Vice-Chancellors so that if any mishap takes place, their dependants may be taken care of?

DR. K. MATHEW JKURIAN: Sir, the insurance may have to be extended to the Minister of Education also.

PROF. S. NURUL HASAN : The next suggestion was that genuine grievances of the students should be looked into. Sir, the Vice-Chancellors and the authorities of the University have been continuously looking into all the genuine grievances of the students and the University Grants Commission has been providing such funds as are possible within the extremely limited allocations that the Parliament has been pleased to make for my Ministry.

SHRI HARSH DEO MALAVTYA : Are you aware of those grievances?

PROF. S. NURUL HASAN : I am aware of many of those grievances.

SHRI HARSH DFO MALAVIYA : What are they and what has been done about them?

PROF. S. NURUL HASAN : Many of those grievances have been removed. For example there was one of the major demands of the students. They wanted some courses to be introduced which would enable them to go into different professions and one of the demands as put forward by them was about a course in Journalism. Now that particular course has already been started and in fact, the present president was one of the persons who sought admission and appeared in the admission test but could not successfully compete for admission in that test. There are a few other demands of the students, Sir, which I would have very much liked to be satisfied. One of these is provision of an auditorium. Now, Sir, as the House is aware, there is a ban on the construction of nonfunctional buildings. There is also dearth of funds. Much as I would have liked a really good auditorium to be built in the B.H.U., the present is not the best time to satisfy this particular demand. Then, Sir, with regard to the Parliamentary committee of inquiry, I have already explained why it is

not possible for the Government to accept it.

DR. K. MATHEW KURIAN: Sir, normally, Prof. S. Nurul Hasan discusses education in the wider context of the socio-political situation. Today I think he has dealt with the Banaras Hindu University problem primarily as the law and order problem. That is the feeling I got. I would like to be corrected.

He said that the University Grants Commission has been providing such facilities as are possible within the constraints of the finance. As a result, we find that despite several inquiry committees and despite the report of the Banaras Hindu University Inquiry Committee which was published in 1958, even today in 1975 a large number of problems which were mentioned in the old report, still exist without many of them being removed. For instance, the 1958 Inquiry Committee said, so far as the welfare problem of the students is concerned, that there is overcrowding which has become chronic and that the teachers are unable to control the classes.

A large number of students are forced to live outside the campus of the university in surroundings that are appalling. All these problems still exist. Similarly, for instance, the report says :—

"It is understood that no attention has been paid to such extra-curricular activities as have a great bearing upon the students' welfare. The canteen arrangements for the students are far from satisfactory. The students have also complained that facilities for library studies are bad and the state of sanitation is deplorable."

These are the words used in the enquiry committee's report published in 1958. These conditions exist even in the year 1975. Unless, therefore, we discuss the student unrest and the problems which have arisen in the BHU in the broader context of the bad conditions both for teachers and students, I am afraid the Minister will not be able to really tackle the problem. An impression has been created, rightly or wrongly—I am not taking sides on this issue—

that there has been a calculated move on the part of the university authorities to prevent Shri Jayaprakash Narayan from addressing the students union meeting. This has been the impression created, rightly or wrongly. It is also broadly believed by people in Banaras and in other places that revenge has been taken by the Vice-Chancellor against the students who were demanding the removal of Dr. Shrimali from the Vice-Chancellorship. Students have been continuously demanding that Dr. Shrimali should be removed. Therefore, it is naturally suspected that the Vice-Chancellor has taken revenge. I would like this to be clarified. I would also like to point out that there is a lack of democratic functioning in the University. Decision-taking bodies, including the University Court, are not elected bodies. They do not have proper representation of teachers and students and Dr. Shrimali is functioning virtually as an autocrat and a dictator. This is the atmosphere in which students and teachers feel alienated from the mainstream of the community life in BHU. It is, therefore, very natural that such a situation as has developed has taken place. In one of his answers to SQ No. 600 in the Rajya Sabha today, the Minister has said : The Central Advisory Board of Education at its meeting held in November, 1974 considered the strategy of educational development and recommended a four-fold strategy. One of the strategies is the creation of a climate of enthusiastic and sustained work in all educational institutions through a deep involvement of teachers, students and the community. This is the greatest joke of 1975. In fact, in the BHU teachers, students and the local community have no role to play in any important decision making. Therefore, I would request the hon. Minister to look into this as one of the vital questions for finding a lasting solution to the problem.

Lastly, I would like to point out that the police have entered the campus and started beating up students severely both on Friday and Saturday. Policemen forcibly entered the hostels and threw away all the students' belongings in their attempt to throw

[Dr. K. Mathew Kurian]

them away from their hostels. The police went amuck ransacking the whole place. Therefore, I suggest that the Central Government should advise the State Government of U.P. to institute a public enquiry into the police excesses in BHU.

MR. DEPUTY CHAIRMAN : Please wind up.

DR. K. MATHEW KURIAN : Now, I come to suggestions. I suggest the following. One, there must be a parliamentary committee to go into the entire affairs of the Banaras Hindu University.

It is high time that a thorough probe was instituted because even in spite of the suggestions and the criticisms made by the Banaras Hindu University Inquiry Committee in 1958, the problems remain unabated. Secondly, Dr. Shrimali should be asked to resign or you should remove him because, however respectable and important a person he may be, he has lost his rapport with the teaching community and the students. Therefore, I think his continuance as also suggested an inquiry into police excesses. The Central Government should advise or request the State Government to do so.

About the democratic functioning of the decision-making bodies, I think the University Court should involve the students and the teachers in the actual governance of the University.

PROF. S. NURUL HASAN : I have very great regard for whatever the hon. Member has to say because of his deep involvement in the academic life of the country. But unfortunately his last recommendations and suggestions do not conform to the point he was earlier making. I mean, there one could see a partisan approach voicing and echoing the demand of his party, irrespective of the impact it would have on the University.

DR. K. MATHEW KURIAN : Sir, it is unfair. An intellectual should have a commitment.

PROF. S. NURUL HASAN : I entirely agree that an intellectual...

MR. DEPUTY CHAIRMAN : Dr. Kurian, you have made certain suggestions and it is for the Minister to reply. Do not be so intolerant as not to listen to his answer.

PROF. S. NURUL HASAN : He firstly raised the point about the amount granted for student welfare. I do not have the exact figures with me. But, if my memory is correct, during the Fourth Plan period between something like Rs. 50 lakhs and Rs. 1 crore—some figure—has been sanctioned for providing student amenities to the Banaras Hindu University.

I have already stated that it was not a calculated move to prevent Shri Jayaprakash Narayan from addressing the meeting. I have explained at length. And it was not a question of the Vice-Chancellor taking revenge : it was, unfortunately, the A.H.U., the Secretary of the Students' Union who wanted to take revenge on the Vice-Chancellor, as he had threatened in the morning.

I have not heard of any report that the police beat up the students or the police had run amuck.

And, again, it is not correct to say that the Vice-Chancellor has no rapport with the teaching community. In fact, when, after this a meeting of the Academic Council was held, several participants cited instances in which the Secretary of the Union had tried to bully and pressurise the teachers, doctors, temple managers, etc. Some of them had even been threatened. In the light of these incidents, a feeling was expressed by the members of the Academic Council for action to be taken. Shri Mala-viya read out a resolution of the teachers. Even in this case, the teachers do not condone, fortunately. Sir, any acts of violence and intimidation by a section of the students.



DR. K. MATHEW KURIAN : I have said about the police violence. Have you seen this ?

SHRI BHUPESH GUPTA: No student has met me, as some students have met selectively Mr. Rajnarain and Mr. Lokanath Misra. So, I am not so well briefed and well informed as these two friends have been. And that speaks a lot about what is going on in the University. How is it that the students did not see us or the Pro-Vice-Chancellor sitting here to seek his advice as to what should be done or what should not be done ? But, of course, they chose Mr. Rajnarain and, of Mr. Lokanath Misra, two great educationists of the country.

As far as the University is concerned, I wish to make it very clear that we all know Dr. Shrimali. He had been with us in this House and he is an educationist is not disputed. Generally, Mr. Prakash Vir Shastri is very balanced although his politics is unbalanced. He acknowledged as an old Member of Parliament that Dr. Shrimali was doing very well here and also when he was in another University. The trouble arose when he went to Banaras. There, I think, Prakash Virji forgot his own assessment and took the assessment of those who must have met Mr. Rajnarain and others. As far as Dr. Shrimali is concerned, is it not a fact that the quarrel with him is not on the plane of administration or any such thing ? Dr. Shrimali, right from the time he went to that University, took care to see that the University functioned on secular foundation. He took certain measures against the R.S.S. element, the Jan Sangh element, not to interfere in educational activities and other things. Everybody knows. Sir, that this is one University where inside the campus they had R.S.S. depots and training centres and we had been demanding that these R.S.S. centres should all be demolished. Up till now that has not been done for technical or other reasons. That is the trouble. Their friends in the R.S.S. and others were trying to run the University on R.S.S. lines and there Dr. Shrimali came in the way. He obstructed it, prevented it

He upheld secular ideas and wanted to bring the students together on the basis of certain broad principles of our national life and, of course, on the basis of academic standards. Then what is it that they have not done ? The people who are demanding the head of Dr. Shrimali on a charge had committed all kinds of crime including crimes of moral turpitude. At that time nobody spoke about it. Sir, enquiry was held. Very good. What is the result of [his enquiry ? Is it not a fact that from the time Dr. Shrimali has been in the University the administration is far, far better than it has been ever from the point of view of dealing with the R. S. S. and other disruptive elements in the University ? Who can deny it ? In Banaras everybody knows, and in the country everybody knows that Dr. Shrimali's only fault was that he went against the R.S.S. I would like to know the position of the R.S.S. What has happened to those depots of the R.S.S., to the R.S.S. office where those drills were held and these people were trained ?

As far as other things are concerned. I do not know about the details and it is not necessary for me. We find no complaint coming from a large section of the teachers. In newspapers we do not see big things, nothing of the kind at all. In the past year in this House we used to hear every day complaints against the University because some of the elements were disturbing the atmosphere here. These days we do not hear anything except, of course, when Mr. Rajnarain and others bring it up here. Therefore, not only I strongly oppose the demand for his removal, I would like to have his term extended, if it is possible, by the Government. He deserves to be given full recognition by Parliament because he has upheld certain principles of our national life and worked for ridding the University of the communal virus. That is what I would like to say.

Sir, I am surprised that my friend, Mr. Prakash Vir, began his intervention today by bringing in the Aligarh University. I find whenever Banaras comes Aligarh always comes. Why ? Both the Universities should

[Shri Bhupesh Gupta] he helped. If the Universities are not getting help we should give help, but I do not like this communal overtone. The suggestion is, Aligarh is getting, Banaras is not getting. That is far from the truth. Let us discuss it and consider what Aligarh needs and what Banaras needs, without any comparison, and let us all work together so that each of these two universities gets what it deserves by way of financial and other assistance. I hope the Minister will look into the matter, both in the case of Aligarh and in the case of Banaras, without making any comparison whatsoever.

Finally, Sir, the trouble with Jayaprakash Narayan is, we have heard him giving lectures about disruption. It is Jayaprakash Narayan who has called upon the students to leave their classes and plunge into total revolution and so many other things, a demonstration of which was noted in the streets of Patna last year. Now, if anybody to-day is trying to disrupt the academic life, it is the movement which has been launched by some rightist parties led by Jayaprakash Narayan. That is what they are doing. Now, am I to believe that the bulk of the students and teachers should go in for a situation where the academic life is disrupted, where total revolution comes to the universities in order to create total chaos, confusion and disruption? Surely not. And if Dr. Shri-mali has expressed himself—I do not know—against this kind of thing, he has only done a public duty as any sensible man will do. If he is a Vice-Chancellor it does not mean that he should be lost to common-sense or public standards. It has never been claimed that a Vice-Chancellor should be immune to what goes on around him, including arson, violence, destruction of public property, intimidation, terrorism and all the rest of it. The Banaras Hindu University should not become a command centre of total revolution for creating total chaos. If Jayaprakash Narayan has not been allowed to go there, I do not know why; but if I were a student, I would not *like* to have Jayaprakash Narayan there,

however much I respect him for his past. Who are interested in getting Jayaprakash Narayan there? The RSS, the Sangharsh-wi'Uahs and others. I am surprised that Mr. Mathew Kurian, an academician, also demands Shrimali's resignation. Mr. Mathew Kurian, yesterday your party was in the procession of Jayaprakash Narayan, but that need not be projected here in making the demand for the removal of Dr. Shri-mali

DK. K. MATHEW KURIAN : If you have developed a soft corner for him, you can express it.

*(Interruptions)*

SHRI BHUPESH GUPTA : Well, my heart is without any coiner. All I am saying is, what is the crime Dr. Shrimati has committed?

DR. K. MATHEW KURIAN : Your alliance with the Congress you need not express here.

*(Interruptions),*

SHRI BHUPESH GUPTA : Dr. Shri-mali is not a active Congressman. What crime has Dr. Shrimali committed? How many people have you got in the university who can stand up to the RSS bullies, who stand up to the vicious communalism, who can stand up to the vicious communalism, character assassination and intimidation and on secular foundations, and that the RSS is not allowed to have its way? How many people have you got? *(Interruption)* You are not dealing with marxists. You have now become a champion of RSS boys. . .

DR. K. MATHEW KURIAN : It is a slander. You are a lackey of the Congress. Do not slander our party. *(Interruptions)* You have your alliance with the Congress party.

*(Interruptions)*

SHRI BHUPESH GUPTA : Why are you bringing in the question of alliance with the Congress? *(Interruption)* You have your alliance with Prafulla Sen. Your

party was led in the other House by Mo-rarji Desai. Don't tell me. (*Interruptions*) Why bring that in ? For you, good Congressmen must be led by Morarji Desai, but it is not so. I have not gone to Prafulla Sen. (*Interruptions*) Now, I am sorry for you, Dr. Kurian. If at all I have got any soft corner, it is for you, Dr. Kurian. Therefore, I want to rescue you.

DR. K. MATHEW KURIAN : You rescue yourself from the Congress.

SHRI BHUPESH GUPTA : Dr. Kurian, you are drifting into a situation. . . (*Interruptions*). . . Sir, Dr. Kurian is drifting into a situation in which he will be completely lost in the RSS crowd. That is my fear, Dr. Kurian. I want to rescue you and I am on a rescue operation now.

SHRI K. CHANDRASEKHARAN : Mr. Bhupesh Gupta, he does not want to be rescued by you.

DR. K. MATHEW KURIAN : Mr. Bhupesh Gupta, you rescue yourself first.

SHRI BHUPESH GUPTA : Sir, Prof. Nurul Hassan needs a little compliment as Education Minister.

SHRI. YASHPAL KAPUR : Just as they have their *pairokars* in the Allahabad High Court, they have got their *pairokars* here also.

SHRI BHUPESH GUPTA : Yes, they are all there in the Allahabad High Court. Why are they sitting here in the House ? These people should have gone to the Allahabad High Court.

MR. DEPUTY CHAIRMAN : You have said whatever you wanted to say. Now, please wind up.

SHRI BHUPESH GUPTA : Sir, in conclusion, I want to say that I do not take Mr. Lokanath Misra seriously. He has said many things about this. But, after all, he is only a film star and as a politician, he is gone. Therefore, I do not want to say anything against him now. He was more comical and sometimes we need such

comic figures in the Parliament in order to have some entertainment in the midst of the otherwise monotonous work. So, I take him only in that spirit.

Now, Sir, about Prof. Nurul Hasan, it must be said that under his Ministry, those people, who are secular like Dr. Shrimali and others, have been emboldened to act on a secular basis and I hope, Sir, irrespective of the community to which he may belong, he would be encouraged to act in this way only. When the communal forces are on the rampage in the campuses of the universities in the country, these academic men, these Vice-Chancellors and others who are secular, who are for national integration, who are against the forces of communalism, against communal disruption and all that, should be given encouragement and I think, Sir, in that perspective, Dr. Shrimali deserves our compliments, our congratulations, our goodwill, our sympathy and our unstinted support. Thank you, Sir.

SHRI YASHPAL KAPUR : Mr. Bhupesh Gupta, he also comes from a backward community. He is a '*tiuiti*'.

SHRI BHUPESH GUPTA : No. He is "Shrimali".

PROF. S. NURUL HASAN : Sir, I can assure the honourable Member and this honourable House that the Government stands firmly in favour of secular trends and those trends which will promote national integration in all spheres of life, particularly in the educational institutions. Sir, there are two specific points which the honourable Member has raised and I will briefly refer to them.

Firstly, I can assure him that in assessing the needs of the various Universities, there is no question that if so much is to be given to one University, an equal amount or lesser amount should be given to the other. The needs are judged on only two criteria : On the merits of the case and on the availability of funds. Therefore, I do not think that that was the intention of

[Prof. S. Nurul Hasan] my honourable friend, Shri Prakash Vir Shastri, who asked whether the needs of the Banaras Hindu University were being looked into or not. I hope he is satisfied with the figures that I have given.

SHRI PRAKASH VIR SHASTRI: : Yes.

PROF. S. NURUL HASAN : Sir, with regard to the people of the RSS in the Banaras Hindu University, the Gajendra-gudkar Committee had made a reference to it. But, Sir, the matter got involved in a court case and, therefore, this recommendation of the Gajendragadkar Committee has not been implemented.

श्री देवेन्द्र नाथ द्विवेदी : माननीय उपाध्यक्ष जी, ध्यानाकर्षण प्रस्ताव के माध्यम से इस सदन में जो काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की वर्तमान परिस्थिति पर, जिस घटनाक्रम की नार्किक परिणति विश्वविद्यालय के बन्द होने में हुई, हमें विचार करने का अवसर मिला है। जब मैंने ध्यानाकर्षण प्रस्ताव के साथ प्रकाशवीर जी और लोकनाथ जी का नाम देखा तो मुझे लगा कि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में जो हुआ है उससे वे दुखी हैं और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की जो परंपरा है उसके प्रति सम्मान और आदर और विश्वविद्यालयी स्वायत्तता को अक्षुण्ण बनाए रखने की जो उनकी इच्छा है उसमें प्रेरित होकर उन्होंने इस प्रश्न को उठाने का प्रयास किया, लेकिन उनके भाषण सुनने के बाद मुझे बड़ा दुःख हुआ। उस स्थिति को राजनीतिक स्वरूप दिया गया, जिन बातों की निन्दा की जानी चाहिए थी, जिन बातों की भर्त्सना की जानी चाहिए थी उनका जिक्र भी उन्होंने नहीं किया। अगर उन्होंने छात्र संघ के महामंत्री द्वारा उपयोग किए गए शब्दों की निन्दा की होती, अगर उन्होंने कहा होता कि इस ढंग की बातें उपकुलपति के लिए नहीं कही जानी चाहिए थी, हिंसा की जो घटनाएँ हुई, जिस ढंग से विश्वविद्यालय के उपकुलपति के निवास पर आक्रमण किया गया, फर्नीचर तोड़ा गया। जिस ढंग से वहाँ की काकरी को नष्ट किया गया, गमलों को तोड़ा गया और कुलपति के ड्राइंग रूम का दरवाजा पूरे का पूरा

नष्ट हो गया और उनकी जान का खतरा जिस तरह से उत्पन्न कर दिया गया था उस परिस्थिति में सिवाय इस के कि विश्वविद्यालय को बंद कर दिया जाए और छात्रसंघ के महामंत्री के खिलाफ कार्यवाही की जाए और कोई विकल्प नहीं रह गया था और उन्होंने यह निर्णय अकेले नहीं किया। उन्होंने ऐकैडेमिक कौंसिल से अनौपचारिक रूप से बात कर के इस का फैसला किया। उस की बिना भर्त्सना किये हुए, केवल राजनीतिक लाभ उठाने की दृष्टि से यहाँ प्रकाशवीर जी ने इस प्रश्न को उठाया और उत्तर प्रदेश की विधान सभा में श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी जी ने और प्रताप नारायण तिवारी जी ने इस प्रश्न को उठाया। तो स्वतन्त्र रूप से काशी विश्वविद्यालय को जिस ढंग से राजनीति में अंतरंग का मोहरा बना कर उस रूप में उस का उपयोग किया जा रहा है उस की भर्त्सना न करने हुए और उस स्थिति के प्रति चिन्ता न प्रकट करने हुए प्रकाशवीर जी ने वहाँ का एक संतुलित चित्र प्रस्तुत नहीं किया है। माल्यवर, इसके तीन पहलू हैं। एक तो विश्वविद्यालय में जो घटनाक्रम रहा उस का एक पहलू है। उस के संबंध में माननीय मंत्री जी ने बताया है। मैं एक बात और बताना चाहता हूँ। हाल के चुनाव में जो वहाँ अध्यक्ष चुना गया है वह विद्यार्थी वैद्य रूप से चुनाव नहीं लड़ सकता था। वह एक प्राविजनल स्टूडेंट था। लेकिन वह चुनाव लड़ गया और उस समय मुकदमेबाजी हो रही थी। लेकिन उन के बावजूद भी चुने जाने के बाद अध्यक्ष के और अन्य पदाधिकारियों के, कुलपति जी ने उस को अनुमति दी कि वह अपना काम करे। इस के लिये वहाँ के कुलपति जी को प्रशंसा की जानी चाहिए। जो लड़के यहाँ आये थे और लोकनाथ जी ने जिनका जिक्र किया था, 4 तारीख को वह चुनाव हुआ था और 6 तारीख को यहाँ जयप्रकाश जी का प्रदर्शन हुआ था। उस में वह लड़के चुनाव के तुरंत बाद ही चले आये और जब वे वहाँ आये तो वे यहाँ आ कर अपने नेताओं से मिले और वे लोग मुझ से भी मिले और उन्होंने कहा कि हम चुने गये हैं। हमें अवसर दिया जाना चाहिए। मैंने स्वयं जिज्ञा मंत्री जी से वार्ता की और मैंने

कहा कि एक इतने बड़े बहुमत से वह चुना गया है इसलिये उस को काम करने का अवसर दिया जाये। और शिक्षा मंत्री जी ने उस को अवसर दिया और कुलपति जी ने यह फैसला किया कि बावजूद इसके कि वह चुनाव अवैध हुआ है, उन्होंने उस को काम करने का अवसर दिया। लेकिन उसी समय महामंत्री द्वारा यह घोषणा कि हम श्रीमानों को गुंडई नहीं चलने देंगे, यहाँ पना नहीं हिल सकता हमारी : छा के विरुद्ध, पिछले सालों में जितने पाप हुए हैं उन सब का हम धो देंगे यह निहायत—यदि मैं आप की अनुमति ले कह सकूँ तो—वदनमौजी की और घुटता की बात थी और यदि सम्मति का मिनिमम स्टैंड भी मेन्टेन किया जाना है तो ऐसे व्यक्ति के खिलाफ कार्यवाही की जानी चाहिए। उसके बाद जो घटनाएँ घटी हैं वह आप को मालूम हैं तो मैं समझता हूँ कि विश्व-विद्यालय की स्थिति पर दुःख प्रकट करने हुए वह घटनाक्रम जो वहाँ रहा और जिसकी तार्किक परिणति उस की बंदी में हुई है उसकी निन्दा की जानी चाहिए और मैं माननीय मंत्री जी से मांग करता हूँ कि वह इस सदन को आश्चर्य दें। विश्वविद्यालय के कुलपति जो स्वयं एक बड़े शिक्षा-विद हैं और जो इस सदन के सदस्य रह चुके हैं, शिक्षा मंत्री रह चुके हैं उन के संबंध में मैं इतना जरूर कहना चाहूँगा कि डा० श्रीमानों ने जिस कठिन परिस्थिति में और बाहरी और जनसंघ के और राजनारायण जी को पार्टी के सारे प्रयासों के बावजूद जिस प्रकार काशी विश्वविद्यालय की शान्ति और सुरक्षा को बनाये रखा है और उसको जिस ढंग से चलाया है उस के संबंध में यही कह सकता हूँ कि इतिहास के किसी योग्य लेखक ने लिखा है विशेष कर राजनीतिक नेता के संबंध में कि :

"His greatest achievement was that he survived."

तो मैं तो यह कहूँगा कि उन लोगों के सारे प्रयासों के बावजूद वह मरबाइव कर रहे हैं और विश्व-विद्यालय चल रहा है यह एक बहुत बड़ी बात है।

अंत में मैं दो बातें और कहना चाहूँगा। पिछले कई वर्षों में काशी विश्वविद्यालय की शान्ति और सुरक्षा को लगातार बिगाड़ने का प्रयास यह दो दल कर रहे हैं। एक भारतीय जनसंघ है और दूसरी है सोशलिस्ट पार्टी और बकायदा यह दोनों मिल कर वहाँ काम कर रहे हैं। लेकिन उस सब के बावजूद जो वहाँ के संबंध में प्रकाशवीर जी को चिन्ता है वह है वहाँ के ज्ञानिवाद के संबंध में। पिछले कई वर्षों में वहाँ ज्ञानिवाद को भारतीय जनसंघ के लोगों ने ही सब से ज्यादा बढ़ावा दिया है। ए० सी० जोशी के जमाने से वहाँ सब से ज्यादा ज्ञानिवाद बढ़ा है। तो उस के बाद में वहाँ की स्थिति बराबर बिगड़ती रहती है लेकिन उस के लिये हर अवसर पर बार-बार जांच आयोग की मांग करना और हमारे मानवीय जी ने भी कहा मैं समझता हूँ कि ऐसा उनको नहीं करना चाहिए था, ऐसी मांग करने से विश्वविद्यालय की स्वायत्तता पर आघात होता है। यह उन के हित में नहीं होना कि जो बार-बार एक व्यक्ति को ले कर जांच आयोग को मांग की जानी है। वह एक गैर जिम्मेदाराना बात है और एक हल्की बात है।

आखिर में मैं एक प्रश्न और करूँगा और एक सुझाव दूँगा। मेरा सुझाव यह है कि माननीय मंत्री विरोधी पक्ष के नेताओं को बुलाकर विश्व-विद्यालय के लिए एक आचार-संहिता तैयार करें कि उनमें हमारा क्या स्थान नहीं होना चाहिए और छात्र लोग जो कि विभिन्न राजनीतिक दलों से सम्बद्ध होते हैं वह अगर पदाधिकारी हों जायें तो किस ढंग से और क्या नामों हों जो कि वह आवज्व करे और किस तरह से विश्वविद्यालय राजनीति को दलीय राजनीतिक से जोड़ा जाए, इस पर एक आचार संहिता तैयार होनी चाहिए। इस और माननीय मंत्री जी पहल करें।

*urgent public importance*

PROF. S. NURUL HASAN : I would just like to be very brief. I entirely endorse the remark of the hon. Member that even in the choice of words, decorum and decency have to be maintained in universities. Sir, if those words had been used in this House, you would have expunged

I Prof. S. Nurul Hasan] those words from the proceedings of the House and if any Member had persisted in doing so, you would have expelled him and, I am sure, the House would have joined you in taking the most serious view. In universities, we teach people to build up their character, decorum, decency and good behaviour. I hope we have not reached a stage where decency and good behaviour are going to be at a discount in a youth. Therefore, it was only fit and proper that the Vice-Chancellor should have taken the most serious view of this type of improper behaviour.

Sir, the other point raised by the hon. Member is also quite right. He said that the universities should not be allowed to become gamesmen on the political chess board. I have expressed this view earlier also in connection with another university, a national university. I had said at that time that whatever happened, the Government would not like it to become a football on the political playing field. I do hope that the leaders of the political parties would give serious thought to what is happening in the universities. They are not harming the children of the Members of one political party or the other, they are harming the future of India and it is this matter that should cause serious concern to leaders of all political parties, for it is too serious a matter to be dealt with only at the level of the Education Minister. It has to be considered by everyone in the country as to which way our universities are being taken.

MR. DEPUTY CHAIRMAN : Mr. Shah Nawaz Khan will make a statement.

#### STATEMENT BY MINISTER

#### RE. AL-LEGEND SUICIDE BY MISS K JYOTHI XrTTTCAR EMPLOYEE

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE AND IRRIGATION (SHRI SHAH NIWAZ K H A N) : Mr. Deputy Chairman, Sir . . .

Miss K. Jyothi was born on 19th August, 1946. Consequent upon the sudden death of her father, Shri N. N. Krishnan, Section Officer, Central Water and Power

Commission, on 15th August, 1966, she was appointed as Technical Assistant on the Government Side of the Indian Council of Agricultural Research with effect from 8-11-1966 (AN) on compassionate grounds. At the time of her appointment, she was studying in M.Sc. final in Anthropology in the Delhi University and she was, therefore, allowed to complete her course as a regular student. Miss Jyothi was declared quasi-permanent in the post of Technical Assistant with effect from 9-11-1969 and on 18-4-1970, she was promoted to the post of Senior Technical Assistant on the Research Side of the Council. On the basis of the option exercised by her, she was taken over as a regular employee of the Indian Council of Agricultural Research (Research Side) with effect from 1-2-1972 and the case for confirmation in this post is being processed.

At the time of her appointment in the Council, Miss Jyothi was staying in quarter No. 563, Sector IV, R. K. Puram, which was allotted to her late father. The Council subsequently took up the matter with the Directorate of Estates and she was allotted alternative accommodation on compassionate grounds on an out of turn basis, where she had been living ever since.

In November 1973, Miss Jyothi applied for the Junior Fellowship under the Indian Council of Agricultural Research in-service candidates Junior Fellowship Scheme to take up higher studies leading to a M.Sc. degree. Her application was considered with other candidates at the meeting of the Selection Committee constituted for the purpose on 5th June, 1974 and the selection was approved on 21-6-1974. She was selected for the fellowship in the subject of Plant Breeding leading to a Master's degree and was informed vide Council's letter dated 25-6-1974. The junior fellowship which was awarded to Miss Jyothi carries a stipend of Rs. 300/- per month for a period of two years from the date of joining the course by the fellow.

Subsequently, at the personal request of Director General, Indian Council of Agricultural Research, Dr. M. S. Swaminathan